# सत्याग्रह के सन्त

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

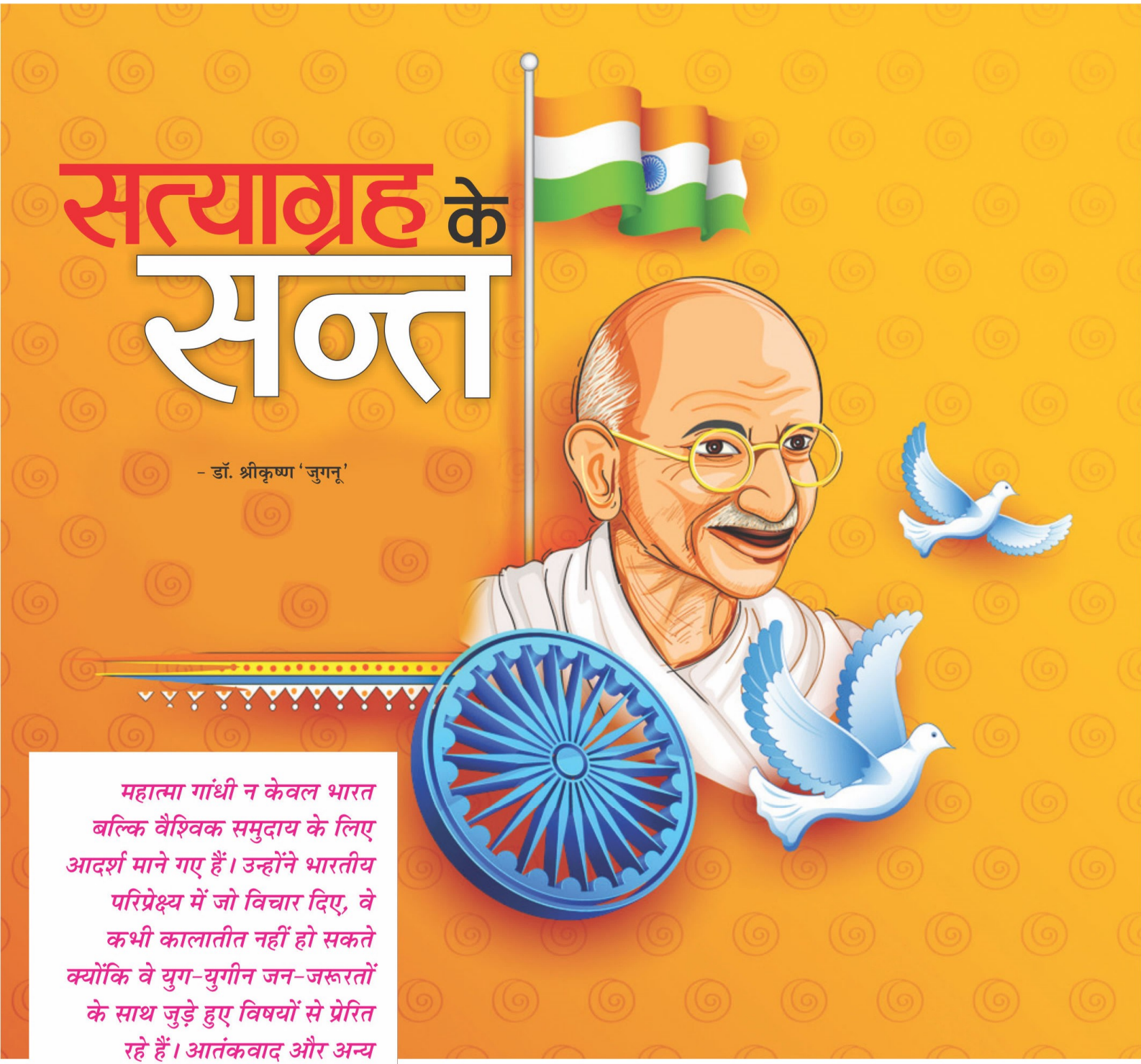

*महात्मा गांधी न केवल भारत बल्कि वैश्विक समुदाय के लिए आदर्श माने गए हैं। उन्होंने भारतीय परिप्रेक्ष्य में जो विचार दिए, वे कभी कालातीत नहीं हो सकते क्योंकि वे युग-युगीन जन-जरूरतों के साथ जुड़े हुए विषयों से प्रेरित रहे हैं। आतंकवाद और अन्य वैश्विक समस्याएं आज जिस तरह से सिर उठाती जा रही है, उनके निरोध अथवा निराकरण का एकमात्र उपाय सत्याग्रह में निहित दिखाई देता है। सत्याग्रह सर्वत्र जांचा-परखा गया है। ऐसी समस्याओं को आद्योपांत समझकर ही गांधीजी ने सत्याग्रह को सर्वोच्च महत्व दिया था।*

उन्होंने माना कि यद्यपि यह मार्ग तलवार की धार पर चलने जैसा है फिर भी मुझे तो यह सरल से सरल मालूम हुआ है क्योंकि वैसी भूलें करके भी मैं बच गया हूं और अपनी समझ में आगे भी बढ़ा हूं। दूर-दूर से विशुद्ध सत्य की, ईश्वर की झांकी भी मैं कर रहा हूं। मेरा यह विश्वास दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है कि इस दुनिया में एक सत्य ही है, उसके सिवा दूसरा कुछ भी नहीं है।

गांधीजी वकालात की शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए थे लेकिन अध्ययनकाल में ही पढ़ाई के प्रति निष्ठा और फिर अफ्रीका में संघर्ष के दौरान जन-जन की सेवा के प्रति आकृष्ट हुए और जो कुछ विचार उन्होंने किया, वह पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन से कहीं अधिक व्यावहारिक धरातल पर परीक्षित किया गया। उनके ये परीक्षित प्रयोग सत्य के साथ प्रयोग के रूप में वैश्विक विचार संसार में जाने जाते हैं। अध्ययनकाल से ही गांधीजी आत्मविश्वास के संचय पर जोर देते थे। उनको धार्मिक सिद्धांत रुचिकर लगते थे। मथुरादास त्रिकमजी कृत उनकी संक्षिप्त आत्मकथा में यह अनूठा प्रसंग है :

बैरिस्टर कहलाना आसान मालूम हुआ लेकिन बैरिस्टरी करना कठिन लगा। कानून तो पढ़े लेकिन